□□ श्री गणेशाय नमः

क्या आप जानते है कि:

कल्प : ब्रह्मा जी का एक दिन होता है। इसमें 14 मन्वन्तर होते है। इस समय सातवाँ मन्वन्तर "वैवस्वत" चल रहा है।

युग : चार है, सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापर युग व कलियुग, चारों को मिला कर एक महा युग बनता है। इस समय 27 महायुग का 27वां कलियुग चल रहा है।

संवत्सर : एक वर्ष को संवत्सर कहते है इस में 12 मास होते है और प्रत्येक 30 दिन का होता है।

अयन : अयन का अंथ है "गमन" साल मे सूर्य 6 महीने के लिए उतर की और (गमन)करता है व 6 महीने के लिए दक्षिण की और गमन करता है इसीको उतरायन (Summer Solstice)/दक्षिणायन (Winter Solstice) कहते है

पक्ष : चन्द्र मास (Lunar Month) के दो पक्ष है एक को कृष्णपक्ष कहते हे जिसमे अमावस आती है दूसरे को शुक्लपक्ष कहते है जिसमे पूर्णिमा होती है।

तिथि (त्यथ):सूर्य व चन्द्र अपनी–अपनी गति के कारण जब एक दूसरे से 12 अंश (12^0) दूर रहते हे तो एक तिथि यानि चन्द्र का एक दिन बन जाता है। ऐसे मे कभी कभी तिथि दो दिन अथवा क्षय हो जाती है, एक महीने में 30 तिथियाँ आती है। (Lunar Day)

तिथियों के नाम यह है।

1) प्रतिपदा ..... ओकदोह
2) द्वतीया ..... दोय
3) तृतीया ..... त्रय
4) चतुर्थी ..... चोरम
5) पंचमी ..... पाँचम
6) षष्टी ..... षयम
7) सप्तमी ..... सतम
8) अष्टमी ..... ऑठम
9) नवमी ..... नवम
10) दशमी ..... दहम
11) एकादशी ..... काह
12) द्वादशी ..... बाह
13) त्रियोदशी ..... त्रुवाह
14) चर्तुदशी ..... चौदाह
15) अमावस्या ..... मावस
या पूर्णिमा ..... पुनिम

वार : सूर्य के एक उगने से लेकर अस्त होकर फिर से उगने के समय तक को वार कहते है इसमे AM व PM नही होता है तथा यही सूर्य का दिन है (Solar Day)

वारों का नामः

1) भानुवासरे ..... आथ्वार
2) चन्द्रवासरे ..... चॅन्द्रवार
3) भौमवासरे ..... भोमवार
4) बुधवासरे ..... बोधवार
5) बृहस्पति वासरे..... बृसवार
6) शुक्रवासरे ..... शुक्रवार
7) शनिवासरे ..... बट्टवार

नक्षत्र (नछत्र): नक्षत्र देवताओं का घर है यह कुल 28 है जिसमे एक नक्षत्र अभिजित अदृश्य रहता है तथा सम्पूर्ण मनोरथो को पूर्ण करने वाला है (यह सभी एक जगह स्थिर रहते है)इनके नाम यह है:–

नक्षत्रो के नाम क्या है

1.	अश्विनी	2.	भरनी	3.	कृतिका	4.	रोहिणी
5.	मृगशिराः	6.	आर्द्रा	7.	पुनवर्सुः	8.	तिष्यः
9.	अश्लेषा	10.	मघा	11.	पूर्व फाल्गुनी	12.	उतर फाल्गुनी
13.	हस्तः	14.	चित्रा	15.	स्वतिः	16.	विशाखा
17.	अनुराधा	18.	ज्येष्ठा	19.	मूलः	20.	पूर्वा आषाढ
21.	उतर आषाढ	22.	अभिजित	23.	श्रवण	24.	धनिष्ठा
25.	शतभिषक	26.	पूर्व भाद्रपद	27.	उतर भद्रपदा	28.	रेवती

मुहूर्त : दिनमान के 15वें भाग को मुर्हूत कहते है शुभ कार्य के योग्य मुहूर्त देखा जाता है मुहूर्त 2 घडी का अर्थात 47 मिन्ट का हाता है।

ब्रह्ममुहूर्त: सूर्य के उदय से 4 घडी यानि लगभग डेढ घण्टे पूर्व बह्ममुहूर्त होता है।

प्रदोष काल : सूर्य के अस्त के बाद 47 मिनट तक प्रदोष काल होता है (कई इसे ज्यादा समय का मानते है)

कौन से गौत्र पर्व काल को पहले दिन ही मनाते है?

मौद्गल्यश्च तथा धौम्यो दतात्रैय औपमन्यवौ, पालदेवो, भारद्वाजः, गौतमः सप्त इति पूर्वभागिनः

दिनमान : Duration of a Day

कुछ गोत्र है जो कि पर्वा के दो होने की स्थिति मे पर्व को पहले दिन ही मनाते है जैसे दो शिवरात्री व जन्माष्टमी होने पर पहले वाली मनाते है। यह है मौदगलय, धौम्य, दतात्रेय, उपमन्यु, पालदेवो, भारद्वाज व गौतम

कौन से पर्व दिवादेव की अवस्था मे पहले दिन ही मनाये जाते है?

कुछ पर्व ऐसे होते है जो दिवा (देवादेव), की स्थिति मे श्राद्ववत् (पहले दिन) मनाने होते है यह है।

यक्षेशे (क्ष्यचमावस), षट वक्त्र (कुमार षष्टी), दीप (दीपावली), विटंकम् (संकट निवारणी चतुर्थी) शकुनि लिंग (चेत्र प्रतिपदा–शुद्धि नवरेह), राज्ञीन्ते–सीता (तील अष्टमी), गौरी (यक्षणी चतुर्थी) सरस्वती मात्रिका (मौंजहोर ओकदोह) च पूर्वः तिथि श्राद्धवत् दर्शनिया व श्राद्धवत अर्थनीयां।

गोपालाष्टमी का क्या महत्व है?

कामधेनु (गाय) को गुढ़, आटे का कोश मिला कर नीचे दिये गये मन्त्रों को पढ़ते हुए खिलाऐ इस दिन श्री कृष्ण ने गोवर्दन पहाड को छोटी अंगुली की नोक पर उठा कर सभी प्राणियों की रक्षा की थी।

सौरभैयाः स्वर्ग हिता पवित्राः पुण्यराशयः प्रतिगृहवन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्य मातरः
इससे माता कामधेनु व श्री कृष्ण की कृपा आप पर रहेगी।

काव पुनिम (काव पूर्णिमा) को क्या करें?

चावल सब्ज़ी इत्यदि कौए को किसी ऊँचे स्थान पर धास के आसन (काव पोतुल) पर यह मंत्र पढ़ कर देवे।

ऐन्द्रे वारूण वायव्या याम्या नैर्ऋतिकाश्रच ये वायसाः प्रति गृहन्तु इमं पिण्डं मयोद् धृतम।

देवी अन्नपूर्णा का दिन कैसे मनाते है?

यह पर्व कार्तिक शुक्लपक्ष की द्वतीया को होता है (इस वर्ष 28th Oct.)

माता का ध्यान–

रक्तां विचित्र वसनां नव चन्द्र चूडाम, अन्न प्रदान निरतां स्तनभार नम्राम।
नृत्यन्त इन्दुशकलाभरणं विलोक्य हृष्टां भजे भगवती भवदुःख हत्रीम
गायत्री अन्नपूर्णे विदमहि, अष्टाङ्गर्यै धीमहि तन्ना अन्नपूर्णा प्रचोदयात्– 3 बार

मन्त्र

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा–10 बार

इसके बाद किसी छोटी थाली मे पका हुआ अन्न लाकर नमस्कार करें व पढे

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राण वल्लभं, ज्ञान वैराग्यं मे देहि अन्नपूर्ण नमोस्तुते

जिस घर मे माता की संतुष्टि होती है उस घर मे अन्न की कमी कभी नही रहती है। फिर प्रसाद बाँटे।

दर्भ अमावस्या का महत्व क्या है?

इस दिन स्वयं ब्रह्मा जी का जन्म दिवस है इस दिन दर्भ काटी जाती है ताकि वर्ष भर प्रयोग की जा सके। इस दिन दर्भ की 14 लम्बी तीलियों को ब्रह्मगाँठ मे बाँध कर अपने दरवाजे के बाँयी तरफ ऊपर टांग दे। (अन्दर से बाहर जाते हुए दायी तरफ) जब तक यह रहेगा तब तक कोई भी बाधा धर मे प्रवेश नही कर पायेगी, यदि दर्भ न मिले तो द्रमन की जड का प्रयोग करें।

तैलाष्टमी के दिन का महत्व क्या है?

हर रात्रि के दिन सभी पितृ "वटुक मंडप" मे अपना भोग लेने के लिए आते है। वे सभी तैलाष्टमी के दिन वापस पितृलोक जाते है उनकी यात्रा के लिए अन्न व दीप का दान किया जाता है।

यस्मिललोके निरालोके न सूर्यो न अपि चंद्रमा, तमहं तर्तुमिच्छामि दीपं दवा जर्नादनः
प्रेतस्य शून्य रूपस्य यामे मार्गे प्रयासतः तमो अन्धकार सन्दोहं नाशयाशु जर्नादनः
प्रेतस्य वायुरूपस्य यामे मार्गे यियासतः झिपं नाशय मोहान्ध्यं भालनेत्र नमोस्तु तेः
यामै पाशैर्विकृष्टस्य पितृनां पयि यास्यतः ज्वाला संस्थे महालक्ष्मि तमोन्ध्य नाश याशु मे।।
तत सत् ब्रह्म अद तावत–मासस्य–पक्षस्य–वासरायां
स्मस्त माता पितृनां तैषा परलोके प्रकाश वृद्धिर्थं धोर अन्धकार निवारणार्थे ज्योति रूपं दीप राजं परिकल्पयामि नमः।

एक दीप जलाकर आरि पर रखे, तथा एक और आरि पर पकवान रखें जिस के ऊपर लाल रंग का शलगम रखा जाता है जो कि महापिशाचनी चण्डालिनी को तृप्त करता है।

श्रावण बाह का क्या महत्व है?

श्रावण बाह – शोपियान (काशमीर) मे उन व्यक्तियों का श्राद्ध किया जाता है जिनकी मृत्यु शादी से पहले अथवा छोटी उम्र मे हुई हो इसको कपाल मोचन श्राद्ध भी कहा जाता है। जम्मू मे यह अखनूर मे कर सकते है इसमे गुन्दुम के आटे का प्रयोग होता है।

कुम्भ क्यों देते है?

गर्भाशये अल्प प्रमाणम् अपि बीजं कालतो वीर रुपताम् आप्नुवत् ईश्वरानुकम्पया जगति महाकार्य–करण समर्थ यथा जायते। तथैवाल्प प्रमाणम् अपि कुम्भस्थम् इदं जलं मन्त्र श्रद्धा अतिशय महिमना परलोके शतधार जल प्रवाहं भूत्वा प्रेतादि पितृणं कामन्प्र पूर्य तत्तृप्तये स्वधा भवतु इत्यर्थः।।

गर्भ मे पडा हुआ यह अल्प आकार का प्राणी जब माता के गर्भ से बाहर निकलता है तो ईश्वर की कृपा से बडे–बडे कार्य कर जाता है। वैसे ही कुम्भ मे दिया हुआ पानी अल्प (कम) मात्रा मे होकर भी मन्त्र व श्रद्धा की महिमा से परलोक पर अनन्त धाराओं वाला जल प्रवाह बनकर सभी पितृों की सब कामनाओं को सम्पूर्ण करके उनकी परा तृप्ति के लिये अमृत रुप बनता है।

महाकाल भैरवाष्टमी क्यों मनाते है?

इस दिन महाकाल का जन्मदिन है इससे परिवार मे धर्म व सौभाग्य की वृद्धि होती है। अपने परिवार जनों के मंगलमय जीवन के लिए महाकाल की मन्त्रों से संतुष्टि की जाती है। जनेऊ (सव्येन)

कल्पांत कालाग्निे, चर्तुभुजम्, कायकोपजुष्ठम, कपाल, खटवाँग, वराभयाध्यं, कांत,
महाकालं अनन्तं ईडयै,
 शन्नो देवीए भिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः
 ह्रीं श्रीं महाकाल भैरवाय मम गृहस्थस्य आयु, आरोग्यं, ऐश्वर्यं जन्माते देहि देहि नमः

कभी–कभी पर्व दो दिन तक क्यों व्याप्त रहते है?

व्रत मे तिथि दो प्रकार की मानी जाती है

क. शुद्धा ख. विद्धा

शुद्धा

जो तिथि सूर्य उदय से आरम्भ होकर दुसरे सूर्योदिय या व्रत नियत समय तक हो वह तिथि शुद्धा कहलाती है इसमें (Judgement) करने की आवश्यकता नहीं है।

विद्धा

जो तिथि आरम्भ या समाप्ति के समय दूसरी तिथि से जुड जाये वह विद्धा कहलाती है इसमे निर्णय की अवश्यकता है इसको "तिथि वेध" कहते है इसको सूर्योदय तथा सांयकाल समय गिना (Calculate) जाता है।

कभी–कभी चंद्रमा का उदय व अस्त काल सूर्य के दो संध्याओं मे प्रवेश कर जाता है और ऐसी अवस्था मे निर्देष यह है कि चंद्र तिथि का प्रभाव दो दिनो तक रहता है

संध्याद्वये समाश्लिष्टा भास्वता या त्रयोदशी।
निशालिंगितभूतेशा, सपि मिश्रा मता बुधैः।।

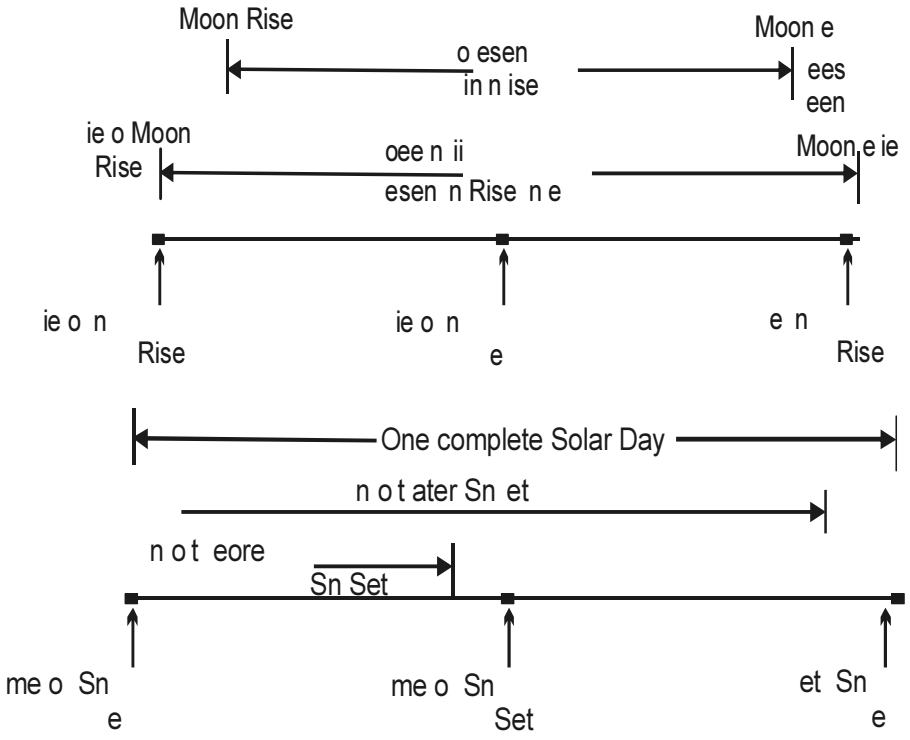

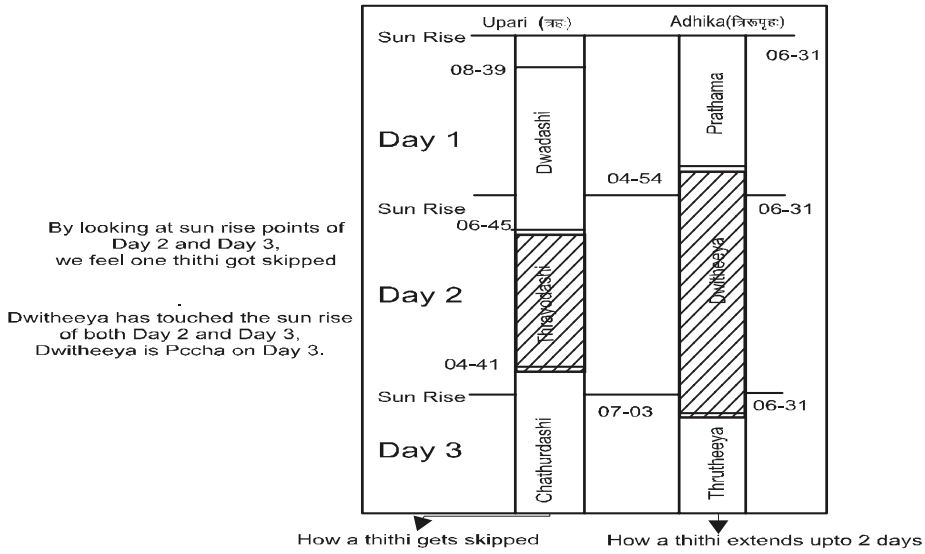

जिस शिवरात्री–त्रयोदशी को सूर्य प्रातः संध्या को स्पर्श करता हो और रात्री मे चर्तुदर्शी व्याप्त हो वह मिश्रा (Mixed) कहलाती है क्योंकि दोनो कालों (सांय व अर्धरात्र) मे त्रियोदशी व्याप्त होती है इसी कारण कभी–कभी कुछ पर्व दो दिनों तक मनाये जाते है। ऐसे ही कई जटिल गणित है जो कि कशमीर के पंडितों ने प्रयोग मे लाये है ताकि हमारे पर्व हमारे गोत्रों को आरम्भ करने वाले ऋषियों के निर्देष अनुसार मनाये जा सके।

कशमीर मत के अनुसार दिन का क्या मान है?

उदयात् उदयति भानौ यां तिथि प्रतिपदयते।
सः तिथि सकलागनयंः संक्रातिपि व्रतः दिषो।।

हमारा दिवस एक सूर्य उदय से दूसरे सूर्य उदय तक रहता है जिसको तिथि (ओकदोह, द्वोय) कहते है इस बीच यदि कोई भी संक्राति आदि तिथि की प्रविष्टि (Enter) हो तो उस सम्पूर्ण काल को ही व्रत धारण करे (इसमें सुबह, शाम AM or PM न देखे रात के 12 बजे व्रत खण्डित न करे)

कई पर्व ऐसे है जिनमे ईष्ट देव को भेग लगाने तक ही व्रत रखना होता है जैसे हररात्रि "हैरत" इत्यादि।

दो दिन तक तिथि रहने पर क्या करें?

जब कभी कोई तिथि दो दिन तक रहे ऐसी अवस्था मे पितृकार्य (श्राद्ध) इत्यादि पहले दिन करें और देवकार्य (जन्मदिन) इत्यादि दूसरे दिन करें।

गौरी तृतीया व त्रिपुरा चतुर्थी का महत्व क्या है?

गौरी तृतीया (गुरु त्रय) को हजारो सालों तक विध्यार्थीयों को प्रमाण प्रत्र (Certificate) दिया जाता था कृपया साक्षात धर्म मूर्ति अपने कुल गुरु द्वारा अथवा स्वयं ही अपने बच्चों को माता सरस्वती व अन्य देवी देवताओं के चित्र भेंट करे। त्रिपुरा चतुर्थी (तिक चोरम) के दिन नई कक्षाएँ प्रारम्भ होती थी इस कारण इस दिन बच्चो/विध्यार्थीयों को पढ़ने के लिए मन्त्र प्रदान करें।

श्री गणेशस्य सडकट चतुर्थी व्रत कृष्णपक्ष चतुर्थ्यां चन्द्रोदय व्यापि, चन्द्रोदये भोजनं च।

श्री गणेश जी की संकट निवारणी चतुर्थी के व्रत मे चंद्र उदय के समय भोजन किया जाता है।

जन्माष्टमी व्रत

यदा अष्टमी (सप्तम्याः दिने रात्रौ व अर्ध रात्र पर्यन्तं सप्तमी विद्धा) स्यात् तदा पूर्वदिने सप्तम्यमेव कैश्चित्पूर्वभगिभिरिदं व्रतम् उपवास लक्षणं विधीयते।
उपवास का समय सप्तमी के दिन व रात दोनों ही कालो मे व्याप्त होता है।

प्रविष्ट–(पूर) क्या है?

का अर्थ है प्रविष्ट होना। जब भी चन्द्र उदय होकर सूर्य के अस्त के समय को पार कर जाती है उस को प्रविष्ट अर्थात (पूर) तिथि कहते है।

दिवा–(देवादेव) क्या है?

दिवादेव का अर्थ है "दिन मे" जब चन्द्र उदय होकर सूर्य अस्त से पहले ही अस्त हो जाता है उस को दिवा अर्थात "दिवादेव" कहते है। क्योंकि चंद्र दिन में ही अस्त हो जाता है।

त्रिसूपह क्या है?

चन्द्र उदय होकर जब अगले सूर्य उदय को पार करता है तब वह तिथि दो दिन मनाई जाती है इससे कभी –कभी दो अष्टमियाँ या दो नवमी बन जाती है। एसे मे पितृ क्रिया पहले तथा देव क्रिया अगले दिन करनी चाहिए।

त्रिहः क्या है?

एक दिन–रात मे जब चन्द्र उदय व अस्त हो तथा दोनों समयो पर सूर्य उदय का स्पर्श न हो तो समझो एक तिथि का लोप हो गया है। "रावुन" को ही त्रिहः कहते है।

बारह मासों के नाम क्या है?

चैत्र	–	चॅत्र	आश्विन	–	आश्दि
वैशाख	–	व्यहक	कार्तिक	–	कार्तिक
ज्येष्ठ	–	ज्येठ	मार्ग	–	मोंजहोर
आषाढ	–	हार	पोष	–	पोह
श्रावण	–	श्रावुण	माघ	–	माघ
भाद्र	–	भाद्रपद	फाल्गुन	–	फाल्गुन

पंचक क्या है?

पंचक– हर 22 या 23 दिनो के बाद पाँच नक्षत्रो के समूह को "पंचक" कहते है
यह पॉच नक्षत्र

धनिषठा, शतभिषा, पूर्वाभद्रपदा, उतराभद्र पदायां और रेवती

इनमे निषेद कर्म – दाह संस्कार केवल (पंचक शांत करके)
छलुन, दक्षिण की यात्रा, मिटटी, तेल, मिटटी के बर्तन, लकडी, छत (Lintel) मस मुचररून

कृप्या ध्यान दें

- **हमारा एक वर्ष**– देवताओं का एक दिन–रात है।
- दक्षिणायन– देवताओं का रात्रिकाल है
- उतरायन– देवताओं का दिन है।
- चैत्र शुक्लपक्ष नवमी– को श्री राम का जन्म दिन होता है इसी कारण राम नवमी है।
- कार्तिक शुक्लपक्ष की नवमी– सत्यायुग का जन्म दिन
- वैशाख शुक्लपक्ष की नवमी– त्रेतायुग का जन्म दिन
- माघ की अमावसया– द्वापरयुग का जन्म दिन
- भाद्रकृष्णपक्ष त्रियोदशी .... कलियुग का जन्म दिन
- *<u>हवन सामग्री का क्या फल है।</u>*
- श्री फल – अर्थ सिद्धिः (Wealth)
- अझोटै– सुत सौभाग्यं (Well being of children)
- जातीफलं – न व्याधिहृत् (No disease)
- रुयातिश्च – पध्मबीजेन (पंबछ) (Fame)
- सवौषध्यो – ज्वरापहा (Curbs fever)
- भुवनेश्वरी जयंती– का दिन भाद्र शुक्लपक्ष की द्वादशी को होता है।
- शाकम्भरी देवी जयन्ती– पोष शुक्ल पूर्णिमा को होता है।
- फाल्गुन शुक्लपक्ष पूर्णिमा– भगवान मनु का जन्म दिन होता है।
- कमला यात्रा "त्राल" श्रावण कृष्णपक्ष की एकादशी को होती है।
- गुदर यात्रा– श्रावण शुक्लपक्ष की पंचमी।
- मातृका पूजा– पोष कृष्णपक्ष ओकदोह।
- गौतमनाग यात्रा– अन्नतनाग (कशमीर) नारायणी काह भाद्र शुक्लपक्ष।
- श्री भटट् दिवस– हर वर्ष चैत्र कृष्ण अमावस्या को होता है।

- उमा भगवती का विशेष दिन– चेत्र शुक्लपक्ष नवमी है।
- पूर्णराज भैरव– का दिन पोषकृष्ण पक्ष षष्टी है
- आनन्देश्वर भैरवः यह अखाडा के साथ मैयसूमा (श्रीनगर) में है इसका विशेष दिन पोष कृष्णपक्ष दशमी है
- तोषकराज़ भैरव– नरसिंह गढ़ में है
- बहूखटकेश्वर –छच़बल, चेत्र पूर्णिमा को विशेष दिन।
- विश्कसेन भैरव–महाकाली मंदिर के सामने जैना कदल मे स्थित है।
- नन्दकेश्वर भैरव– सुम्बल (कशमीर) मे स्थित है (ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष की अमावसी)
- मंगलेश्वर भैरव– ब्रारी नुऽमबल मे स्थित है इसको नीलमत के अनुसार नमच्बल के नाम से जाना जाता है, वैशाख कृष्ण पंचमी के दिन होता है
- वेतालराज़ भैरव– (रैनावारी कशमीर) इस का विशेष दिन पोष व वैशाख मे मनाया जाता है
- शिवा भगवती– (अकिनगाम, कशमीर) इस देवी का मुख वराह रुप है विशेष दिन चेत्र शुक्ल नवमी।
- नरसिंह अवतार का विशेष दिन वैशाख शुक्लपक्ष त्रियोदशी है
- भद्रकाली का दिन– ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष की एकादशी
- हरीश्वर यात्रा– ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष की अमावसया को होता है।
- राज्ञा भगवती– मँज़गाम यात्रा ज्येष्ठ शुक्लपक्ष की अष्टमी।
- पंचक मे भी– अखरोट का वितरण (Distribution) कर सकते है क्योंकि इनमे वेद निहित है।
- **हार सप्तमी– को श्री राम माता के गर्भ मे स्थापित हुए।**
- **हार नवमी– जया देवी का विशेष दिन, यह देवी हारि पर्वत (श्रीनगर) के सप्तर्षि के स्थान पर विध्यमान है।**
- **शुक्र का अस्त– 25 July 2011 को इस बीच कोई शुभ कार्य न करें।**
- **ज्येष्ठ पूर्णिमा – माता रूपभवानी की जयंती है, इनका मायका पाम्पोर (कशमीर) मे है व सुसराल पाँद्रेठन (कशमीर) मे है।**

- **दक्षिणायन – इस दिन देव नदी गंगा काशमीर मे "गया" गामवोर (शॉदपुर) के स्थान पर विराजित हुई।**
- **गीता ज्यन्ती के दिन श्री कृष्ण ने अर्जुन को कुरूक्षेत्र मे गीता जी का उपदेश दिया था तथा संजय ने धृतराष्ट को सुनाया था**
- **मोंजहोर तहर– के दिन मातृकाओं की पूजा की जाती है। मातृकाए वह मातायें है जिनसे सृष्टि का विस्तार होता है।** (These Matrkias develop the universe by sounds known as **शब्द ब्रह्म), यह सप्त मातृकाएँ है।**
- 26th Sept **इस दिन संत शिरोमणि परमसचार्य स्वामी श्री राम जी का श्राद्ध होता है इनका गोत्र भूत ओपमन्यो है।**
- **काम्बरपछ मे पूर्णिमा– का श्राद्ध केवल अमावस्या के दिन ही पडता है।**
- **भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्थी– को नवदल तीर्थ को जो कि त्राल (कशमीर) मे स्थित है श्राद्ध कार्य किया जाता है। इस स्थान पर 9 छोटे–छोटे जल स्थल है अमरनाथ जी की यात्रा इसी स्थान पर परिपूर्ण मानी जाती है तथा इसी जगह अमरनाथ यात्रा मे प्रयोग हुए डँड़ों इत्यादि का दान किया जाता है।**

सभी विवेकी व्यक्तियों से निवेदन है कि यह भारत के पुरातन व सनातन संस्कृति के सूक्ष्म बीज है जो हमने सुरक्षित रखे है इनको समय व स्थान की विवशता के कारण यू ही न गँवाये।

आशा है आप सभी का जीवन इस वर्ष मंगलमय होगा तथा आप अपने समाज के प्रति कर्तव्य को नही भूलेंगे

ज्योतिषाचार्य व कर्मकाण्ड शिरोमणि
श्री काशी नाथ हण्डू